रात्रि क्लास 6-12-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चे समझते हैं हम साहबज़ादे और साहबजादियाँ हैं। फिर शाहज़ादे बनते हैं। साहब के जादे ब्रह्मा द्वारा ही बनते हैं। बाप दादा दोनो हैं तब बन सकते हो। नहीं तो बन न सको। आत्मा कितनी छोटी चीज़ है। शरीर तो बहुत बड़ी चीज है। तो इतना बड़ा दुम्ब घड़ी2 याद पड़ता है। आत्मा कितनी छोटी है। आत्माओं को बाप कहते हैं तुम सभी साहबजादे हो। सभी को वरसा मिलता है। परन्तु यहां बैठे तो तो प्रवृति मार्ग है तो साहबजादे और साहबजादियां हो। बाप को याद न करेंगे तो वरसा कैसे मिलेगा। एक है जिसमानी बाप। दूसरा है रूहानी बाप। हद के जिसमानी बाप से हद का वरसा मिलता है। यह है बेहद का रूहानी बाप। सारा पढ़ाई पर मदार है। तन मन धन से सेवा करते हो ना। भण्डारी सर्विस करती है तो कितनी आशीर्वाद मिलती है। बाप ने यह तन लिया है लोन पर। तो इसमें भी मदद मिलती है। अपने को आत्मा समझ सिर्फ बाप को याद करना है। इसमें ही माया भुलाती है। इनको कहा जाता है युधा। हम याद करते हैं माया भूलाती है। और बाकी कोई बाबा पैरा नहीं पहनाते हैं। तुम समझते हो हम बेहद के बाप के पास आये हैं। वह हम आत्माओं का बाप है। बेहद का बाप। तुम बेहद के बाप को याद तो कहां भी कर सकते हो। जितना याद करेंगे पाप कटते जावेंगे। याद की है यात्रा। यह अक्षर बाप ही सुनाते हैं वह है तीर्थ यात्रा। यह है याद की यात्रा। मुक्तिधाम जीवनमुक्तिधाम दोनों ही तीर्थ है मुख्य। वह है जड़ चित्रों की यात्रा। यहां है बाप के पास जाना। बुधि कहती है आत्माओं के बाप के पास जरूर जानी है। कितने ढेर आत्माएं जावेंगी। मनुष्य याद भी घर को करते हैं ना। घर में जाकर नया कपड़ा बदलना होता है। इसमें कोई तकलिफ की बात नहीं। माया सिर्फ भूलाती है। अभी छोटे बड़े सभी की वानप्रस्त अवस्था है। वाणी से परे जाना है। याद करते2 तुम्हारी आत्मा पवित्र बन जावेगी। जाना भी है घर। यहां 84 का पार्ट बजाया है। आत्मा का यह शरीर रूपी चोला है। इस चोले पर भी तुम कपड़े पहनते हो। नव युग में नया जीवन होता है। पुराने युग में पुरानना जीवन। तुम्हारा इस पेपर में सारा मदार है याद की यात्रा पर। तुम खेलारी तो हो ना। तुम जानते हो ऊपर से हम आत्माएं आती हैं पार्ट बजाने लिये। तुम बच्चे सभी आस्तिक हो। बाप आकर आस्तिक बनाते हैं। माया फिर नास्तिक बना देती है। 5 विकार बहुत कशिश करते हैं। लिखते भी हैं। समझना चाहिए इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह सभी भस्म हो जाना है। यहां किसको भी याद न करना है। आत्माओं को जाना है अपने घर। सबसे तीखी आत्मा है। बिलकुल छोटी है कहां भी जा सकती है। बच्चे समझते हैं जो अच्छा दानपुण्य आदि करते हैं तो इतना वहां मिलता है जो महल आदि बना सके। यहां फिर है रूहानीबाप। अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान दे माला माल बना दो। होगा तो दान करेंगे। होगा ही नहीं तो.. यह है अविनाशी ज्ञान रत्न। औरों को भी दान देते हो। वहां होते हैं दानी तुम हो महादानी। बहुत दान करते हो बाप भी महादानी है। बहुतदान करते हैं तो दूसरे जन्म में तुमको स्थूलधन भी बहुत मिल जाता है। बाप समझाते हैं कुपात्र को दान न करो। शिव बाबा का भक्त नम्बरवन ल0ना0 का भक्त नम्बरवसेकण्ड, राम सीता का भक्त नम्बर थर्ड। उन्हें को ही टच होता है। तुम बच्चे देखते रहते हो। 18 रोज में कोई होशियार हो पड़ते। कोई 18 वर्ष में भी नहीं। सारा बुधि पर मदार है। एक दिन के भी आवेंगे। बाप राजयोग सिखला रहे हैं। इतने सभी सीख रहे हैं। झट टच हो जाता है। समझते हैं और2 स्थानों पर प्रबन्ध करें। धन है तो बड़े2 म्युजियम खोलते हैं। धन कम है तो कहेंगे गीतापाठशाला घर में करते हैं। कब कोई पूछे बोलो यह है रूहानी ज्ञान। जो एक रूहानी बाप के पास ही होता है। कोई भी आवे तो दो बाप की राज बताना है। हम सभी भाई2 हैं। तो बाप जरूर एक होना चाहिए। वरसा मिलता है एक बाप से। बहुत खुशी में अन्दर रहना चाहिए। बाबा आपकी तो कमाल है सारी सृष्टि को वरदान देते हो। शान्तिमय सुखी भव। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो 84 के कहानी को याद करो। चलते, उठते, बैठते याद में रहना है। तब भोजन में भी बल आये। जो अच्छी रीत याद करते हैं वह बहुत प्रेम से भोजन बनाते हैं। क्योंकि इनसे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। तो वहरसूल चली आती है बाप को याद करो दादा को भूल जाओ। अच्छा गुडनाईट।